



222hi15

15

अभिवृत्ति, विश्वास और सामाजिक संज्ञान

आपने कभी ध्यान दिया है कि जब भी हम किसी व्यक्ति से मिलते हैं, हम उसका मूल्यांकन करने लगते हैं? आप अपने दोस्त के बारे में सोचेंगे जो विश्वसनीय, सहायक और चिंता करने वाला है और उसकी तरफ आपकी भावनाएँ सकारात्मक और अनुकूल होंगी। वहीं दूसरी तरफ आपको अपना पड़ोसी जोर से बोलने वाला लग सकता है, जो आपके परिवार की गतिविधियों में हस्तक्षेप करता है। ऐसे व्यक्ति के लिए आपके मन में नकारात्मक एवं प्रतिकूल भावनाएँ होना संभव है। इसी तरह हमारा परिवार, दादा-दादी, पड़ोसी, दोस्त, राजनीतिक नेता और अन्य लोग हमारी अभिवृत्ति व विश्वास को लेकर बातचीत करते होंगे। हमें अपने आपको, तथा दूसरे लोगों को समझने और अपने सामाजिक जगत का मूल्यांकन करने की आवश्यकता होती है। हमारी अभिवृत्ति और विश्वास हमें स्वयं को और आसपास के लोगों को समझने में सहायक होते हैं। इस पाठ में हम अभिवृत्ति की प्रकृति को समझेंगे। हम यह भी समझेंगे कि अभिवृत्ति किस प्रकार बनती है, उन्हें किस प्रकार बदला जा सकता है और अभिवृत्ति तथा व्यवहार के बीच क्या सम्बन्ध होता है। अन्त में, विश्व में घटित होने वाली घटनाओं के कारणों को खोजने का प्रयास करके हम सीख सकते हैं कि हम अपनी दुनिया को और अपने सामाजिक जगत में होने वाली घटनाओं का मूल्यांकन करने में अपनी त्रुटियों को कैसे समझ सकते हैं।



उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- अभिवृत्ति के मुख्य घटकों का वर्णन कर सकेंगे;
- अभिवृत्ति एवं व्यवहार के बीच सम्बन्ध के वर्णन को स्पष्ट कर सकेंगे;
- किस प्रकार अभिवृत्ति के बदलाव को सरल और सुसाध्य बनाया जा सकता है, इंगित कर सकेंगे; और
- सामाजिक संज्ञान और उसके पक्षपातों के संप्रत्यय की व्याख्या कर सकेंगे।



15.1 अभिवृत्ति की प्रकृति

आप बार-बार अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों, दोस्तों, अध्यापकों तथा अन्य लोगों से मिलते हैं। धीरे-धीरे आप अपने प्रति उनके व्यवहार के बारे में सोचने लगते हैं। फिर आपको उनके प्रति एक विशेष प्रकार के व्यवहार का अनुभव होता है, और आप उसी ढंग से उनसे व्यवहार करना आरम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में 'सोचने', 'अनुभव करने' तथा 'व्यवहार' के द्वारा हम दूसरे व्यक्तियों, घटनाओं, वस्तुओं तथा अपने सामाजिक जगत की सभी बातों के प्रति एक अभिवृत्ति बनाने लगते हैं।

लोगों, वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति हमारे अनुकूल या प्रतिकूल मूल्यांकन को अभिवृत्ति कहा जाता है। हम अपनी अभिवृत्ति का संचार कथन के रूप में करते हैं जैसे, 'मुझे आप पसन्द हैं', 'मुझे शास्त्रीय संगीत अच्छा लगता है', या 'मुझे रॉक संगीत अच्छा नहीं लगता।' जब हम 'पसन्द', 'नापसन्द', 'प्रेम', 'घृणा', 'अच्छा' और 'बुरा' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं तब हम किसी वस्तु, व्यक्ति या मुद्दे के प्रति अपनी अभिवृत्ति प्रकट कर रहे होते हैं। अभिवृत्ति के तीन पहलू होते हैं – संज्ञानात्मक, प्रभावी और व्यावहारिक।

- 1. संज्ञानात्मक भाग :** यह उस सोच से सम्बन्धित है, जो मनोवृत्ति के प्रति विश्वास का विकास करता है।
- 2. प्रभावी भाग :** यह दिशा (सकारात्मक या नकारात्मक भावना), व्यक्ति की मूल्यांकन तीव्रता या वस्तु अभिवृत्ति के प्रति अनुभव किये गये संवेग से सम्बन्धित है।
- 3. व्यावहारिक भाग :** यह किसी भी वस्तु अभिवृत्ति के प्रति विशेष रूप से अभिनय की संभावना है।

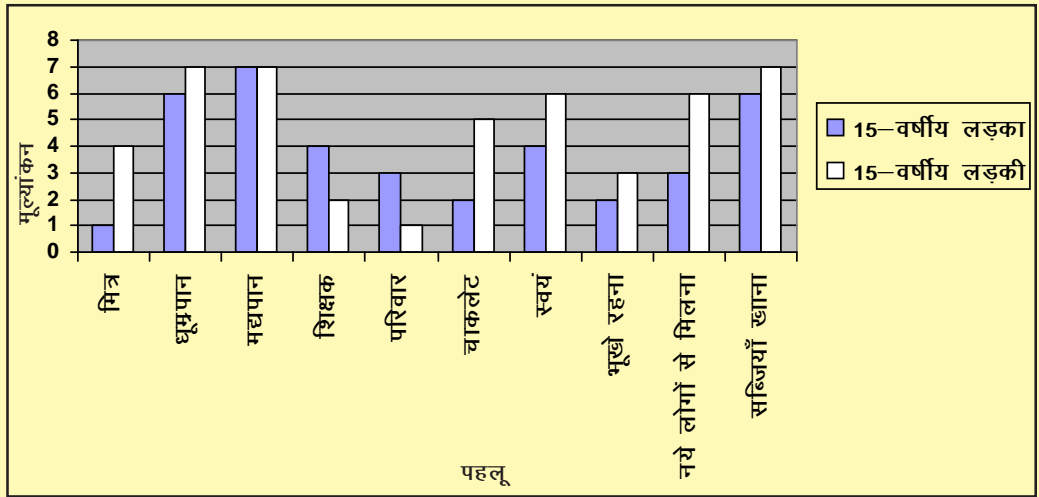
यह तीनों पहलू सोचना, अनुभव करना तथा व्यवहार करना मिलकर किसी भी व्यक्ति व वस्तु के प्रति एक अभिवृत्ति बनाते हैं। किसी समय ये घटक असंगत हो सकते हैं। इस प्रकार आप अपने पड़ोसी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रख सकते हैं— वह समझदार और कठोर परिश्रमी है (सकारात्मक अभिवृत्ति), लेकिन आपको उसका व्यवहार नापसन्द हो सकता है या आपको आपका पड़ोसी पसन्द नहीं लेकिन परिस्थितिवश आप उसकी सहायता करते हैं। दोनों बातों की संभावना रहती है। सामान्यतः अगर आपकी अभिवृत्ति मजबूत है तो यह तीनों घटक संगत रूप से विद्यमान रहते हैं तथा एक दूसरे का विरोध नहीं करते। उदाहरण के रूप में, अगर जानेमाने क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर आपके पास के किसी स्थान पर आने वाले हैं और आपको क्रिकेट खेलना व देखना बहुत पसन्द (अनुभूति) है तो आप तुरन्त ही सक्रियता से योजना बनाकर (सोचने की प्रक्रिया) वहाँ जरूर जाएंगे (व्यवहार); या आपको सचिन तेंदुलकर एक उत्तम क्रिकेट खिलाड़ी लगते हैं (सोचने की प्रक्रिया) लेकिन आप न ही अच्छे खिलाड़ी हैं, न ही आप नियमित रूप से क्रिकेट देखते हैं (कम पसन्द या भावनात्मक अनुभव) और इसलिए उनसे मिलने के लिए अधिक प्रयत्न न करने का निर्णय ले सकते हैं (व्यवहार की कम संभावना)।



क्रियाकलाप 1

अभिवृत्ति के घटक

- अ. अपने प्रिय मित्र के प्रति विभिन्न पक्षों, जो आप सोचते, अनुभव करते (सोचना) तथा व्यवहार करते हैं, की एक सूची तैयार करें। अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक, प्रभावी तथा व्यवहारिक घटकों को पहचानें।
- ब. अलग-अलग विषयों की सूची तैयार करें। नीचे दी गई सूची का भी प्रयोग कर सकते हैं, अब इनका मूल्यांकन करें – स्कूली शिक्षा, धूम्रपान, अध्यापक, पीना, स्वयं, भूखे रहना, नए-नए लोगों से मिलना, परिवार, दोस्त, सब्जियाँ खाना, चॉकलेट इन सभी को 7 अंक के मापक जोड़कर, (1) “सबसे कम पसन्द” से लेकर (7) “सबसे अधिक पसन्द” तक मूल्यांकित करें।



चित्र 15.1: विभिन्न पहलुओं पर दो व्यक्तियों का मूल्यांकन

- स. अपने किसी मित्र को भी यही सूची मूल्यांकित करने के लिए दें। अब दोनों सूचियों की तुलना करें व दोनों में समानता व विभिन्नता को देखें। आप अपनी अलग सूची भी बना सकते हैं।
- द. क्या आप किसी भी व्यक्ति की अभिवृत्ति को किसी भी एक घटक के हिसाब से निर्धारित कर सकते हैं?

यह पाया गया है कि अभिवृत्ति एक लम्बे समय तक बनी रहती है। अभिवृत्तियाँ विशेषकर तब बदलती हैं जब आप नवीन अनुभव करते हैं। साथ ही यह लोगों की विशेषताएँ होती हैं जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग रूप व क्षमता की होती हैं जो सामाजिकता तथा सामाजिक जगत के साथ अन्तःक्रिया पर निर्भर करती हैं।



अभिवृत्ति के कार्य

हम अभिवृत्तियों का निर्माण क्यों करते हैं? यह सामाजिक जीवन का सरलीकरण करती हैं, जो बहुत जटिल होती हैं और अलग-अलग प्रकार की जानकारी से भरी होती हैं। अभिवृत्ति हमारे जीवन में चार महत्वपूर्ण कार्य करती हैं –

1. अभिवृत्तियाँ हमें अपने आस-पास के संसार को समझने देती हैं। सकारात्मक अभिवृत्तियाँ हमें कुछ लोगों के पास जाने में तथा उनकी बात मानने में सहायता करती हैं। आप अपने को आदर्श व्यक्ति के साथ पहचान सकते हैं (जैसे- सचिन तेंदुलकर, मदर टेरेसा) और इन्हीं की तरह सोचने व व्यवहार करने का ढंग अपनाने का प्रयास कर सकते हैं। नकारात्मक अभिवृत्तियाँ हमें ऐसे लोगों व स्थितियों से दूर रखती हैं।
2. अभिवृत्तियाँ सामाजिक समूहों का वर्णन करने में सहायता करती हैं, जिनसे हम में से प्रत्येक व्यक्ति सम्बन्ध रखता है। परिवार, मित्र समूह, धार्मिक या राजनीतिक समूह के सदस्य होने के कारण हम एक जैसी अभिवृत्तियाँ रखते हैं जो हमें एक साथ जोड़े रखने में सहायक होती हैं। इसीलिए शायद हम जिस सामाजिक और राजनीतिक समूह से सम्बन्ध रखते हैं उनके प्रति अनुकूल व दूसरे समूहों के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति प्रस्तुत करते हैं।
3. अभिवृत्तियाँ हमें 'हम कौन हैं' या अपनी पहचान को समझने में भी सहायक सिद्ध होती हैं। अभिवृत्तियाँ मूल्यों तथा आत्म-संप्रत्यय को व्यक्त भी करती हैं। उदाहरण के रूप में, कुछ लोग एकता को अधिक महत्व देते हैं और वहीं कुछ लोग स्वतंत्रता या करुणा को अधिक महत्व देते हैं। ईमानदारी के प्रति महात्मा गांधी की अभिवृत्ति एवं गरीबों तथा जरूरतमंदों के प्रति मदर टेरेसा की चिन्ता सर्वविदित है।
4. अभिवृत्तियाँ हमें दूसरों से सहायता, प्रशंसा व स्वीकृति प्राप्त करने में भी सहायक होती हैं। समान अभिवृत्तियों वाले व्यक्ति एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। उदाहरणतः आप और आपका दोस्त एक जैसी रुचि व अभिवृत्ति रखते हैं, आप दोनों एक-दूसरे को पसन्द भी करते हैं और इसलिए अपनी दोस्ती को बनाये रखना आपके लिए आसान है। इस प्रकार अभिवृत्तियाँ हमें अपनी सामाजिक अन्तःक्रिया में सहायता करती हैं।



पाठगत प्रश्न 15.1

निम्नलिखित वक्तव्य सही है या गलत :

1. अभिवृत्तियाँ किसी व्यक्ति या किसी वस्तु का सकारात्मक मूल्यांकन हैं।
2. एक वस्तु अभिवृत्ति के प्रति संवेग अभिवृत्ति का प्रभावी घटक है।
3. अभिवृत्तियाँ थोड़े समय के लिए होती हैं।



4. अभिवृत्तियाँ हमें स्वानुभव प्रदान करती हैं।
5. विशिष्ट अभिवृत्तियाँ होना हमें दूसरों की स्वीकृति प्राप्त करने में सहायता करती हैं।

15.2 अभिवृत्ति का निर्माण व परिवर्तन

अब तक आपने यह समझ लिया होगा कि अभिवृत्ति को मुख्य रूप से दूसरों में बातचीत तथा व्यक्तिगत अनुभव द्वारा ही सीखा जा सकता है। अधिकतर बच्चे अपने माता-पिता की अभिवृत्ति को ही अर्जित करते हैं। क्या आपकी माँ आपको अजनबियों से बात करने के लिए मना करती है? क्या आप अपने दादा-दादी या माता-पिता की तरह धर्मिक हैं?

सीधा सम्पर्क : आपने पहले के पाठ में यह पढ़ा है कि तटस्थ वस्तु प्रतिष्ठित प्रेरक-प्रतिक्रिया के साथ जुड़ती है। बार-बार प्रेरक के साथ जुड़ने में सकारात्मक एवं नकारात्मक भावनाएँ प्रकट होती हैं। वस्तु अभिवृत्ति में भी ऐसी ही भावना होती है। इसमें क्लासिकी अनुबंधन सम्मिलित होता है। (पाठ 5 देखें)। तेज खुशबू, स्वाद तथा इन्द्रियों से सम्बन्धित जानकारी, शक्तिशाली भावनात्मक प्रतिक्रिया ला सकती है। उदाहरण, अगर बच्चा अंकुरित अनाज खाता है और उन्हें नापसन्द करता है, तो यह संभव है कि उसी रंग और स्वाद की चीजों को भी वह नापसन्द ही करेगा।

सीधा निर्देश : माता-पिता, अध्यापकों या नेताओं द्वारा दिए गए निर्देश विशेष प्रकार की अभिवृत्ति का निर्माण करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को बताते हैं कि धूम्रपान करना एवं मद्यपान अस्वास्थ्यकर हैं। अध्यापक भी इसी अभिवृत्ति को सुदृढ़ करते हैं। इससे शायद बच्चा धूम्रपान व मद्यपान के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति बना सकता है।

दूसरों से बातचीत : हम अधिकतर दूसरों के साथ एक समूह में रहते हैं और अपने समूह की मनोवृत्तियों को ग्रहण करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपके दोस्तों के समूह को ऐसा लगता है कि काले रंग की जीन्स व चैन से सजी हुई कमीज पहनना 'ठंडक देता' है तो आपको भी ऐसा ही लगेगा कि इस तरह के कपड़े पहनना 'ठंडक देता' है। इसी तरह, अगर आपके दोस्त यह सोचते हैं कि धूम्रपान करना या शराब पीना 'कूल' है तो शायद आप अपने माता-पिता व अध्यापक की बात न सुनें और अपने समूह की बात से ही सहमत हों। आप इसी तरह के व्यवहार को अपना लेंगे, क्योंकि यह व्यवहार आपको आपके दोस्तों से मिला है। एक समूह के सदस्य के रूप में इसे प्रशंसा, सहमति तथा संतुष्टि कहते हैं। इस तरह के कार्य आपको 'अच्छा महसूस' करवाते हैं, आपके आत्मसम्मान को बढ़ाते हैं तथा आपकी अभिवृत्ति को भी मजबूत बनाते हैं। पुरस्कार के प्रयोग में नैमित्तिक अनुकूलन शामिल है (पाठ 5 देखें) पुरस्कार व सजा देने की प्रक्रिया से बच्चों को विशेष प्रकार की अभिवृत्ति सीखने में सहायता होती है।

प्रेक्षण द्वारा सीख : अभिवृत्तियाँ बहुधा दूसरों द्वारा किये जा रहे कार्य देख कर भी सीखी जाती हैं। क्या आपको याद है जब आप बच्चे थे किस प्रकार आपके दादा-दादी रोज भजन गाते थे? अब बड़े होकर शायद आपको भी वह भजन अच्छे लगते हैं। और किस प्रकार एक आवारा कुत्ते

को देखकर आपकी माँ की प्रतिक्रिया होती थी? अगर वह उसे देखकर डरती और उससे दूर भाग जाने का प्रयास करती थी, तो आप में भी वह अभिवृत्ति विकसित हुई होगी। साथ ही साथ, शिक्षाप्रणाली, मीडिया विशेषकर टी.वी., पिफिल्में, मैगजीन और अखबार यह सब अभिवृत्ति निर्माण को प्रभावित करते हैं। छोटी उम्र के बच्चे जो टी.वी. पर देखते हैं उसी पर विश्वास करते हैं। विज्ञापनदाता इसका लाभ उठाते हैं और बच्चों की अभिवृत्ति को अपने द्वारा बेचे जाने वाली वस्तु के अनुकूल ही बना देते हैं। आपने यह ध्यान दिया होगा अधिकतम कम्पनियाँ व संस्थाएँ विज्ञापनों पर लाखों रुपए खर्च कर देते हैं ताकि वह लोगों की अभिवृत्ति अपने अनुकूल बदल सके।

अभिवृत्ति में बदलाव

हम अभिवृत्ति की प्रकृति व उसके निर्माण के बारे में पढ़ चुके हैं। अभिवृत्ति एक बार बन जाए तो उसे बदलना कठिन होता है। लेकिन अभिवृत्ति सीखी जाती है, इसलिए नई सीख के साथ उसे बदला जा सकता है। अभिवृत्ति में बदलाव निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है –

स्रोत : जो व्यक्ति संदेश देता है वह संचारक कहलाता है। अभिवृत्ति बदलने की संभावना तब सबसे अधिक होती है जब संदेश किसी विशेषज्ञ द्वारा दिया जाए, जो विश्वसनीय, आकर्षक और संदेश ग्रहण करने वाले व्यक्ति के जैसे होते हैं। इस प्रकार अगर सचिन तेंदुलकर किसी विशेष पेय के लिए विज्ञापन करते हुए यह कहते हैं कि उससे उन्हें ताकत मिलती है तो उनका लक्षित जनसमूह युवा बच्चों का होगा जो उन्हें खेल जगत में अपना आदर्श मानते हैं, ऐसे में यह सभी बच्चे वह पेयजल खरीदना चाहेंगे क्योंकि उन्हें ऐसा लगेगा कि इसे पीने के बाद वह सचिन की तरह खेल पाएंगे।

संदेश : संदेश की प्रकृति बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इससे अभिवृत्ति बदलने के लिए जानकारी प्राप्त होती है। संदेश हमेशा स्पष्ट और सुव्यवस्थित रूप में होना चाहिए। जिन संदेशों में चिन्ता एवं भय होता है वह अधिक प्रभावी होते हैं। जैसे एक विज्ञापन में दिखाया जाता है कि तन से आने वाली दुर्गंध से आपके दोस्त आपसे दूर भागेंगे या किसी विशेष साबुन से नहाने से आपके पास दोस्तों की लाइन लगी रहेगी।

व्यक्ति : किसी भी व्यक्ति के अभिवृत्ति बदलाव में उसकी विशेषताएँ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अभिवृत्तियाँ जो मजबूत, व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण, जटिल व एक-दूसरे से सम्बन्धित हों, उन्हें बदलना कठिन होता है। इस तरह परिवार के प्रति आपकी अभिवृत्ति बदलना कठिन होता है, किसी साबुन या पेयजल के लिए नहीं।

इस प्रकार कौन (संचारक) क्या (संदेश) कहता है, किस से (प्रापक), से ही पता चलता है कि अभिवृत्ति में बदलाव होगा या नहीं। दूसरे क्या कहते हैं उसका प्रभाव हम पर पड़ता है। विज्ञापन उद्योग का लक्ष्य होता है किसी विशेष वस्तु या सेवा के प्रति लोगों की अभिवृत्ति बदलना। अपने विज्ञापनों में अभिवृत्ति बदलाव के लिए वह इन्हीं तीन कारकों का उपयोग करते हैं।





क्रियाकलाप 2

अभिवृत्ति बदलाव

अभिवृत्ति में बदलाव तब आसान होता है, जब संदेश लोगों की भावनाओं से खेलता है। शरीर के चित्रों वाले विज्ञापन (टी.वी., समाचार पत्र, पत्रिकाओं से चुनें) और 15–16 आयु वर्ग के किशोरों को लक्षित करें। अभिवृत्ति के तीन कारकों के आधार पर मूल्यांकन करें। अभिवृत्ति का कौन सा कारक विज्ञापन के संदेश में सबसे अधिक प्रबल है?

क्रियाकलाप 3

अभिवृत्ति बदलाव

अपने शहर की उस पत्रिका को चुनें जिसके पाठकगण सबसे अधिक हैं। पत्रिका के सारे विज्ञापनों पर चिन्ह लगा दें।

अ. विज्ञापन में प्रयोग होने वाले शब्दों व चित्रों को ध्यान से देखें। अब अभिवृत्ति बदलाव के तीनों स्रोतों को विज्ञापन में ढूँढ़ें : स्रोत देने वाला व्यक्ति, जो संदेश दिया गया है और जिस व्यक्ति के लिए संदेश तैयार किया गया है। अब एक तालिका बनाएं और बार-बार घटित होने वाले स्रोत को ढूँढ़ें।

ब. विज्ञापनदाता अपने उत्पादों को बेचने के लिए अधिकतर मानवीय प्रेरकों/आवश्यकताओं को विस्तृत क्षेत्र में प्रयोग करते हैं। पाठ 5 में अभिप्रेरणा और संवेग में आपने कई प्रकार के प्रेरकों के बारे में पढ़ा होगा: दैहिक जरूरतें, आत्मसम्मान की जरूरतें, सामाजिक एवं प्रतिष्ठा की जरूरतें तथा औरों के बीच आत्म-सिद्धि। प्रत्येक विज्ञापन में इन आवश्यकताओं को इंगित कीजिए। इंगित आवश्यकताओं में से प्रत्येक बार आने वाली आवश्यकता की सूची बनाइए। यह परियोजना आपको यह बताएगी कि किस प्रकार विज्ञापनदाता लोगों की अभिवृत्तियों में बदलाव के लिए आधारीक और गौण जरूरतों का प्रयोग करते हैं।



पाठगत प्रश्न 15.2

निम्नलिखित वक्तव्य 'सही' हैं या 'गलत'।

1. सीखना अभिवृत्ति के अधिग्रहण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
2. हम जिस समूह से सम्बन्ध रखते हैं उसकी जैसी अभिवृत्तियों को अपनाने के लिए झुकाव रखते हैं।
3. जिन संदेशों में चिन्ता एवं डर होता है वह अप्रभावी होते हैं।

4. अभिवृत्ति में बदलाव लाया जा सकता है अगर संदेश किसी विशेषज्ञ द्वारा दिया जाए।
5. अभिवृत्ति जो मजबूत और व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण हो, उसे बदलना कठिन होता है।

15.3 अभिवृत्तियों और व्यवहार में सम्बन्ध

अभिवृत्ति व व्यवहार का सम्बन्ध जटिल होता है और किसी के व्यवहार द्वारा उसकी अभिवृत्ति के बारे में जानना कभी-कभी कठिन होता है। ऐसा आपने कितनी बार सुना है कि लोग स्वस्थ रहना चाहते हैं लेकिन उनके पास व्यायाम करने का समय नहीं होता, या वह ग्लोबल वार्मिंग से चिन्तित तो हैं लेकिन वह इतनी बड़ी गाड़ी चलाते हैं जो कितना लीटर पेट्रोल पी जाती है। लोग कोई भी बात कह देते हैं लेकिन उसे अपने व्यवहार में पूरी तरह उतार नहीं पाते।

अध्ययन से पता चलता है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में अभिवृत्ति, व्यवहार का अनुमान लगा सकती है –

- जब अभिवृत्ति मजबूत और अपरिवर्तित है, ऐसे में अभिवृत्ति के तीन घटक सुस्पष्ट व सुव्यवस्थित होते हैं और सही रूप में व्यवहार का अनुमान लगा सकते हैं। कमजोर, अमहत्वपूर्ण और अस्पष्ट अभिवृत्ति, कम ही व्यवहार का अनुमान लगा पाती है।
- जब कोई दृढ़ अभिवृत्ति वाला होता है या जब कोई किसी की अभिवृत्ति से परिचित होता है तब इसे आसानी से याद भी किया जा सकता है और व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है।
- जब अभिवृत्ति सीधा अनुभव से निर्मित हो तब व्यवहार का अनुमान अधिक सही होता है।
- जब कोई सामाजिक प्रभाव के अंतर्गत कार्य करता है तब उसकी अभिवृत्ति अलग-अलग रूप में व्यक्त होती है। कोई किशोरावस्था का युवा शायद स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण धूम्रपान व शराब पीना न चाहे। लेकिन उसकी आयु समूह का दबाव उसे पीने के लिए मजबूर कर सकता है। इस तरह से उसका सोचने का ढंग उसके व्यवहार से अलग होता है। जब बाहरी प्रभाव कम होते हैं तब अभिवृत्ति व्यवहार सम्बन्ध मजबूत होगा।



पाठगत प्रश्न 15.3

अभिवृत्ति की सूची को ध्यान से पढ़ें और बताएँ अभिवृत्ति निर्माण के लिए किस प्रकार के सीखने का प्रयोग किया गया है : सीधा सम्पर्क, सीधे निर्देश, दूसरों से बातचीत और प्रेक्षणात्मक सीखना

1. आशा की माँ अपने घर पर व गाड़ी चलाते समय हिन्दी शास्त्रीय संगीत सुनती है। आशा यही संगीत सुनते-सुनते बड़ी हुई है और अब वह भी इस तरह के संगीत को पसन्द करती है।





2. अमित के पिता अपने बेटे को बैठकर समझाते हैं कि क्यों धूम्रपान करना छोड़ देना चाहिए और एक स्वस्थ जीवन जीना चाहिए। अमित धूम्रपान छोड़ देता है।
3. शेखर यह देखता है कि उसके माता-पिता, बड़े भाई, उसके चाचा और करीबी दोस्त सभी बचनबद्धता एवं कड़ी मेहनत को महत्व देते हैं। उसने भी अपनी पढ़ाई की तरफ यही अभिवृत्ति बना ली।
4. 5 साल की रेखा रोज अपनी दादी माँ को सुबह प्रार्थना करते हुए देखती है, अब वह भी अपनी दादी माँ के साथ रोज प्रार्थना करती है।
5. 5 साल की महक ने अभी प्राईमरी स्कूल में दाखिला लिया है। उसकी कक्षा को बहुत चमकीला रंगा गया है, बहुत सारे खिलौने एवं सुरुचिपूर्ण स्वभाव की अध्यापिका है। वह रोज खुशी-खुशी स्कूल जाती है।

15.4 विश्वास और व्यवहार

अभिवृत्ति की ही तरह स्वयं, अपने आस-पास के लोगों एवं वस्तुओं के सम्बन्ध में हमारे कुछ विश्वास भी हैं। विश्वास का अर्थ है किसी भी चीज के प्रति सत्य की भाँति स्वीकारता। यह सच है जब किसी को दृढ़ विश्वास होता है, तब उसे हिलाया नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए यह विश्वास एक पराशक्ति या भगवान मनुष्य के भाग्य का नियन्ता है या उसे पुनर्जन्म में विश्वास है। एक विश्वास बन जाने पर आप किसी भी घटना पर आश्वस्त होते हैं, और आप एवं लोग कैसा व्यवहार करने वाले हैं। हमें समझने में सहायता मिलती है कि लोग विशेष प्रकार का व्यवहार क्यों करते हैं, या कोई घटना क्यों घटित हुई है। विश्वास हमें सामाजिक जगत में अपने अनुभवों को संयोजित करने में सहायता करते हैं और अपने व्यवहार के साथ ही घटनाओं के प्रति भवष्यवाणी करने में सहायता करते हैं।

15.5 सामाजिक संज्ञान

हमारा मन अपने आसपास के संसार को लेकर एक समझ बनाने का प्रयास करता है और जरूरत के अनुसार अनुकूल सामंजस्य अपनाता है। जब आपका/आपकी मित्र आपको जन्मदिन की पार्टी के लिए बुलाता/बुलाती है, तो आपको बहुत सी चीजें पता होती हैं – किस तरह के कपड़े पहनने हैं, आपको उपहार ले जाना है, वहां और भी मित्र होंगे, जन्मदिन का केक और खाने-पीने की अच्छी चीजें आदि। आपको यह सब कैसे पता है? जन्मदिन पार्टी या ऐसी ही कुछ दूसरी गतिविधियों से जुड़ा पुराना अनुभव और जानकारी 'जन्मदिन की पार्टी' का दूसरे उत्सवों से एक अलग चित्र बनाते हैं।

सामाजिक संज्ञान का अर्थ है सामाजिक विश्व से जानकारी प्राप्त करना उसकी व्याख्या एवं मूल्यांकन करना और याद रखना, जैसे कि हम अपने आसपास के लोगों के बारे में सोचते, अनुभव

करते एवं समझते हैं। लेकिन यह जानकारी बहुत अधिक होती है इसलिए हमें उसे सीखने के लिए स्कीमा के रूप में व्यवस्थित करना होता है। स्कीमा एक-दूसरे से जुड़े विश्वास, जानकारी व उदाहरण का समूह होता है जो सामाजिक वस्तुओं, घटनाओं व लोगों से जुड़ा होता है। स्कीमा हमारी सामाजिक सोच व व्यवहार दोनों का मार्गदर्शन करता है। यह जानकारी का सरलीकरण कर देता है जिससे हम नई जानकारी को तुरन्त ही व्याख्यायित कर सकते हैं। स्कीमा विभिन्न प्रकार के होते हैं जो व्यक्तियों, घटनाओं एवं सामाजिक भूमिकाओं से सम्बन्धित होते हैं।

कार्यकलाप 4

स्कीम – युवा पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी

किसी बड़े व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) से एक सूची बनाने के लिए निवेदन करें जो उन्हें स्वयं को व्यक्त करती है और एक दूसरी सूची जो युवा पीढ़ी को व्यक्त करती है। साथ ही साथ युवाओं (पुरुष या स्त्री) को कहें कि वह स्वयं को तथा बुजुर्गों को दोनों को व्यक्त करने वाली सूचियाँ बनाएं। करें। अब दोनों सूचियों की तुलना करें किस प्रकार प्रत्येक समूह की अपनी निश्चित स्कीमा है, साथ ही साथ दूसरे समूह की भी।

हम जानकारी के भार को कम करने के लिए दूसरे तरीकों को भी देखते हैं। हम अन्वेषणात्मक विधि के प्रयोग की ओर प्रवृत्त होते हैं, जो जटिल निर्णयों को लेने में सरल नियम हैं। यदि आपको एक ऐसे व्यक्ति को इंगित करने को कहा जाए जो गैर हाजिर दिमाग है, अपने कार्य के प्रति वचनबद्ध है, लंबे समय तक कार्य करता है, छात्रों से घिरा रहता है तो संभवतः 'प्रोफेसर' कहेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक प्रोफेसर इन विचित्र गुणों वाला होता है। ऐसी विशेषताएं एक नर्तक/नर्तकी, डाक्टर या राजनीतिज्ञ में पाई जाती है।

गुणारोपण: व्यवहार के कारणों को समझिए

हम अपने तथा दूसरे लोगों के व्यवहार के कारणों की खोज करते हैं। इसे गुणारोपण कहते हैं। यदि आपके मित्र ने आपको जन्म दिन की पार्टी में नहीं बुलाया, तो उससे आप पूछना चाहेंगे कि उसने ऐसा क्यों किया। इस प्रकार हम एक निष्कपट वैज्ञानिक की तरह कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। जब हम परीक्षा में अच्छा नहीं कर पाते तो क्या कारण देते हैं, और परीक्षा में अच्छा करते हैं, तो हम क्या कारण देंगे। इसके दो संवर्ग हैं, या तो आप व्यक्तिगत कारणों से आन्तरिक कारणों को असफलता या सफलता के लिए आरोपित करेंगे, जैसे, "मैं अच्छा नहीं कर पाया क्योंकि मैंने प्रयास नहीं किया था" या "मैंने परीक्षा में अच्छा इसलिए किया क्योंकि मैंने बहुत परिश्रम किया था"। व्यक्ति से अलग कुछ बाह्य कारण होते हैं। उदाहरण के लिए, "मैं परीक्षा में इसलिए अच्छा नहीं कर पाया, क्योंकि पेपर बहुत कठिन था।"





त्रुटियों के स्रोत या सामाजिक संज्ञान में पक्षपात

आन्तरिक या बाह्य कारण हम मौलिक गुणारोपण त्रुटि करते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति किसी बैठक में देर से आता है और अपने नोट्स सामने रखता है, तो हम निष्कर्ष निकालते हैं कि वह व्यक्ति 'अव्यवस्थित और बेढंगा' है। हम विलम्ब से आने और नोट्स को जलने को आन्तरिक कारण के रूप में स्पष्ट करने को प्रवृत्त होते हैं। जब हम उस परिस्थिति में होते हैं तब हम बाह्य कारणों को उसके लिए उत्तरदायी मानते हैं, जैसे कि ट्रैफिक जैम या फर्श पर फिसलन थी। इस प्रकार जब हम दूसरों को देखते हैं तो उनके व्यवहार के लिए आन्तरिक कारणों का परिणाम मानते हैं और कह देते हैं कि वह 'अमुक प्रकार का व्यक्ति है'। जब हम अपने व्यवहार के बारे में कहते हैं तो उसके लिए बाह्य या परिस्थितिजन्य कारण बताते हैं।

सामाजिक जगत को समझने के हमारे प्रयास में हम कारण बताने का प्रयास करते हैं फिर भी कभी-कभी गंभीर त्रुटि कर जाते हैं। आशावादी पक्षपात में अधिकांशतः हम यह विश्वास करते हैं कि दूसरों की अपेक्षा सकारात्मक घटनाओं को हम अधिक अनुभव करते हैं। उदाहरण के लिए हम विश्वास करते हैं कि अपने अध्ययन में हम अच्छा करेंगे, एक अच्छी नौकरी पायेंगे और प्रसन्नतापूर्ण जीवन बितायेंगे।

हम दृढ़ नकारात्मक पक्षपात भी करते हैं, नकारात्मक सूचना के प्रति संवेदनात्मक प्रवृत्ति। हम ऐसी सूचनाओं की ओर अधिक ध्यान देते हैं, और उनको अत्यधिक महत्व देते हैं। जब आपको किसी ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में बताया जाता है जो मित्रवत्, बुद्धिमान, सुन्दर और अहंकारी है, इसमें कौन सी सूचना याद रखी जाए। हाँ, सकारात्मक सूचना के बजाये नकारात्मक सूचना अधिक बलवती होगी।

हम अनेक बार इस रूप में सोचते हैं कि "क्या होना चाहिए था" या अवास्तविक सोचना। उदाहरण के लिए जब हम परीक्षा में अच्छा परिणाम चाहते हैं और पाते नहीं, तब हमें अवसर चूक जाने का खेद होता है। हम ऐसा कह लेते हैं "मैंने अधिक अध्ययन नहीं किया होता, और तब मैं प्रथम आता और मुझे छात्रवृत्ति मिल जाती", आगे या तो आप अधिक अध्ययन करेंगे या ऐसे विचार से आपको अवसाद होगा।

कभी-कभी हमारी प्रवृत्ति उस सूचना की ओर ध्यान देने की होती है जो हमारे विश्वासों के अनुकूल होती है और उस सूचना को छोड़ देते हैं जो उसकी पुष्टि नहीं करती। इसे पुष्टीकरण पक्षपात कहते हैं। लोग मूल सूचना को भी छोड़कर वस्तु की स्पष्ट विशेषताओं से प्रभावित हो जाते हैं।

यह कहा जा सकता है कि हम गलती करते हैं विशेषकर जब हम अन्वेषणात्मक विधि का संक्षिप्त रूप में प्रयोग करते हैं और अधिक विस्तार से सोचने का प्रयास नहीं करते। अमहत्वपूर्ण घटनाओं के लिए भी हम अन्वेषणात्मक विधि और अविवेचित प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं, जबकि महत्वपूर्ण घटनाओं के लिए हम सजग प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं और श्रेष्ठता परिणाम पाते हैं। यद्यपि

हम ये त्रुटियाँ करते हैं, ये हमें परिस्थिति को अपनाने में सहायता करते हैं। इससे हमें किसी सूचना पर ध्यान देने में सहायता मिलती है, यह हमारे लिये महत्व का है और जगत को समझने में कम प्रयास करना पड़ता है।



पाठगत प्रश्न 15.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. हमें सूचना का सरलीकरण करने में सहायता करता है कि हम नवीन सूचना की व्याख्या शीघ्र कर सकते हैं। (स्कीमा, सामाजिक संज्ञान)
2. व्यक्तिगत अनुभवों एवं सामाजिक संचार में सीखे जाते हैं। (व्यक्तिगत स्कीमा समूह, स्कीमा समूह भूमिका, स्कीमा समूह घटना)
3. नकारात्मक सूचना के प्रति संवेदनशील होने की प्रवृत्ति को कहते हैं। (अवास्तविक सोचना, नकारात्मक पक्षपात)
4. कुछ प्रकरणों के सम्बन्ध में रोकते समय हम में व्यस्त होते हैं। (अवास्तविक सोचना, विचार दमन)



आपने क्या सीखा

- अभिवृत्ति व्यक्तियों, वस्तुओं, विचारों तथा स्थितियों का अनुकूल व प्रतिकूल मूल्यांकन होती है। अभिवृत्ति के तीन अलग लेकिन एक-दूसरे से संबंधित घटक हैं— संज्ञानात्मक प्रभावी और व्यावहारिक। यह मिलकर वस्तु के प्रति अभिवृत्ति बनाते हैं।
- अभिवृत्ति संसार को समझने के लिए महत्वपूर्ण प्रकार्य देते हैं, सामाजिक समूहों और हमारी पहचान को परिभाषित करने तथा दूसरों से स्वीकृति पाने में सहायक होते हैं।
- अभिवृत्तियाँ अलग-अलग प्रकार के सीखने से बनती हैं : सीधा सम्पर्क, सीधा निर्देश, दूसरों से बातचीत तथा प्रेक्षणात्मक सीखने से।
- एक बार अभिवृत्ति बन जाए तो उसे बदलना कठिन होता है, लेकिन फिर भी बदलाव सम्भव है; क्योंकि अभिवृत्तियाँ नई परिस्थितियों में सीखी जा सकती है।
- दो तरह का अभिवृत्ति बदलाव— संगत तथा असंगत बदलाव। संगत अभिवृत्ति को बदलना आसान है।
- अभिवृत्ति स्रोत, संदेश व लक्षित व्यक्ति पर निर्भर करती है।





- ऐसी परिस्थितियाँ जिसमें अभिवृत्ति व्यवहार की भविष्यवाणी करती है – जब अभिवृत्ति दृढ़ एवं अपरिवर्तित, अभिवृत्ति के होने की सजगता, अभिवृत्ति के निर्माण का सीधा अनुभव और कम से कम बाह्य प्रभाव।
- सामाजिक संज्ञान में सामाजिक जगत को समझने का प्रयास सम्मिलित होता है। स्कीमा और अन्वेषणात्मक विधि सामाजिक जगत से आने वाली सूचना को संयोजित करने में हमें सहायता करते हैं। कारणात्मक गुणारोपण व्यवहार के आन्तरिक और बाह्य कारणों को खोजने में हमारी सहायता करता है।
- सामाजिक संज्ञान में अनेकों त्रुटियों की संभावना होती है, जैसे, नकारात्मकता, सकारात्मकता, पक्षपात, अवास्तविक विचार और विचारों का दमन।



पाठांत प्रश्न

1. अभिवृत्ति को परिभाषित करें। अभिवृत्ति के तीन घटकों का वर्णन करें।
2. अभिवृत्ति के कार्यों का संक्षिप्त वर्णन करें। अपने उत्तर को उदाहरण के साथ लिखें।
3. अभिवृत्तियों का निर्माण कैसे होता है? अपने उत्तर को उदाहरण के साथ लिखें।
4. क्या अभिवृत्तियाँ बदल सकती हैं? अभिवृत्ति को बदलने वाले तीन महत्वपूर्ण कारकों का वर्णन करें।
5. अभिवृत्ति तथा व्यवहार के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करें? उन परिस्थितियों का उल्लेख करें जिनमें अभिवृत्ति और व्यवहार का सम्बन्ध दृढ़ होता है।
6. सामाजिक संज्ञान की व्याख्या करें। हमारे सोचने और व्यवहार को संयोजित करने में स्कीमा की भूमिका स्पष्ट करें।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1

1. गलत 2. सही 3. गलत 4. सही 5. सही

15.2

1. सही 2. सही 3. गलत 4. गलत 5. सही

15.3

1. प्रेक्षणात्मक सीखना 2. सीधा निर्देश 3. दूसरों से बातचीत

4. प्रेक्षणात्मक सीखना 5. सीधा सम्पर्क

15.4

1. स्कीमा
2. स्कीमा समूह
3. नकारात्मक पक्षपात
4. विचार दमन

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. देखें खण्ड 15.1
2. देखें खण्ड 15.1
3. देखें खण्ड 15.2
4. देखें खण्ड 15.2
5. देखें खण्ड 15.3
6. देखें खण्ड 15.5

